हड़प्पा/सैंधव संस्कृति

असि०प्रो० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी० एम० कॉलेज, रहिका, मधुबनी
मो०-8051796740

बीसवीं सदी के प्रारम्भ तक विद्वानों की यह धारणा थी कि वैदिक सभ्यता भारत की सर्वप्राचीन सभ्यता है परन्तु इस सदी के तृतीय दशक में इस भ्रामक धारणा का निराकरण हुआ जबकि दो प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ताओं -दयाराम साहनी तथा राखालदास बनर्जी ने हड़प्पा (पंजाब के मान्टोगोमरी जिले में स्थित) तथा मोहनजोदड़ो (सिन्ध के लरकाना जिले में स्थित) के प्राचीन स्थलों से पुरावस्तुयें प्राप्त करते हुए यह सिद्ध कर दिया कि परस्पर 640 किलोमीटर की दूरी पर बसे हुए ये दोनों ही नगर कभी एक ही सभ्यता के दो केन्द्र थे। हड़प्पा के टीले का सबसे पहले 1826 ई० में चार्ल्स मैसन ने उल्लेख किया था बाद में सन् 1921 ई० में जब सर जॉन मार्शल जब पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक थे तब रायबहादुर दयाराम साहनी ने इस स्थल का पुनः उत्खनन करवाया। इसी प्रकार सन् 1922 ई० में राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो जिसका सिंधी भाषा में अर्थ 'मृतकों का टीला' होता है की खोज करके इसके पुरातात्विक महत्व को विद्वानों की ओर प्रस्तुत किया। इस प्रकार इन दोनों स्थलों की खुदाई के पश्चात् पुरातात्विक नियम के अनुरूप इस पूरी सभ्यता को सिन्धु नदी-घाटी की सभ्यता अथवा इसके प्रमुख स्थल हड़प्पा के नाम पर इसे हड़प्पा की सभ्यता कहा जाता है। सैन्धव सभ्यता 2500 ई०पू० के आस-पास अपनी पूर्ण विकसित अवस्था में प्रकट होती है हड़प्पा, मोहनजोदड़ो के पास अन्य सैकड़ो अनेक स्थलों की खोज के पश्चात् इसका विस्तार पूरब में आलमगीरपुर (मेरठ, उ०प्र०) से लेकर पश्चिम में सुत्कागेनडोर तथा उत्तर में रहमान की ढेरी (पंजाब, पाकिस्तान) से लेकर दक्षिण में भगतराव (गुजरात) तक विस्तृत था। इस प्रकार यह सभ्यता पूरब से पश्चिम तक 1600 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण तक 1400 किलोमीटर तक फैला था। इस प्रकार देखा जाये तो क्षेत्रफल की दृष्टि से यह सभ्यता मिस्र तथा मेसोपोटामिया से कहीं अधिक विस्तृत थी।

आश्चर्य है कि इतनी अधिक सामग्री तथा जानकारी प्राप्त होने के बावजूद भी इस सभ्यता के उद्भव एवं विकास को लेकर आज भी विद्वानों में मतभिन्नता है

हड़प्पा संस्कृति की विशेषताएँ :-

नगर तथा भवन - भारतीय इतिहास में नगरों का प्रादुर्भाव सर्वप्रथम सैन्धव सभ्यता में हुआ। सैन्धव सभ्यता के प्रमुख नगरों में मोहनजोदड़ो, तथा हड़प्पा उल्लेखनीय हैं इन नगरों की खुदाई में पूर्व तथा पश्चिम में दो टीले मिलते हैं इनमें पूर्वी टीले पर नगर तथा पश्चिमी टीले पर दुर्ग स्थित था। नगरों के दुर्ग ऊँची तथा चौड़ी प्राचीरों से घिरे थे। इन नगरों का निर्माण एक सुनियोजित योजना के आधार पर हुआ था। मोहनजोदड़ो की प्रमुख विशेषता उसकी सड़कें थीं। इसके सबसे मुख्य सड़क (33 फीट चौड़ी) को पुरातत्वविदों ने राजपथ कहा है अतः प्रत्येक सड़क तथा गली के दोनों ओर पक्की नालियाँ बनाई गई थीं हड़प्पा का नगर मोहनजोदड़ो से अधिक विस्तृत था। हड़प्पा में स्थित दुर्ग को व्हीलर ने माउण्ट ए-बी की संज्ञा दी है ~~मोहनजोदड़ो का सर्वाधिक~~

मोहनजोदड़ो का सर्वाधिक उल्लेखनीय स्मारक वृहत्स्नानागार है जो उत्तर से दक्षिण तक 180' तथा पूर्व से पश्चिम तक 108' में फैला हुआ है। इसके केन्द्रीय खुले प्रांगण के बीच जलकुण्ड या जलाशय बना है। इसमें उतरने के लिये उत्तर तथा दक्षिण की ओर से सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इस स्नानागार के दक्षिण-पश्चिम छोर पर एक नाली बनी जिसके द्वारा पानी बाहर निकलता था। जलाशय के तीन ओर बरामदे और उनके पीछे कई कमरे तथा गैलरियाँ थीं। मार्शल ने इस स्नानागार को तत्कालीन विश्व का एक 'आश्चर्यजनक निर्माण' बतलाया है। स्नानागार के पश्चिम में 150'×75' के आकार का भवन मिला है जिसे व्हीलर ने अन्नागार बताया है। अन्नागार में हवा जाने के लिये अनेक स्थान बनाये गये थे। अन्नागार के उत्तर में एक चबूतरा है जो अन्न रखने तथा निकालने के लिये बनाये गये गये थे। विद्वानों का विचार है कि यह राजकीय भण्डारागार था जिसमें जनता से कर के रूप में वसूल किया हुआ अनाज रखा जाता था। दुर्ग के दक्षिण की ओर 90'×90' के आकार का एक वर्गाकार भवन मिलता है जिसे 'सभा भवन' कहा गया है। इसमें ईंटों के 20 चौकोर स्तम्भों के अवशेष मिलते हैं। संभवतः इन स्तम्भों पर भवन की छत टिकी हुई थी।

मकान, नालियाँ, तथा स्नानागृह अच्छी तरह पकाई गई ईंटों की सहायता से बनते थे। ईंटें चतुर्भुजाकार होती थीं। सबसे बड़ी तथा सबसे छोटी ईंट के आकार क्रमशः 51×26×6 cm तथा 24×11×5 cm थी। सैन्धव सभ्यता के भवन तीन प्रकार के हैं - निवासगृह, विशाल भवन, तथा सार्वजनिक स्नानागार। मकानों के दरवाजे गलियों की तरफ होते थे। मकानों के दरवाजे तथा छत लकड़ी तथा सीढ़ियाँ पक्की ईंट से बनाये जाते थे।

सामाजिक जीवन — सैंधव निवासियों के सामाजिक व्यवस्था का आधार परिवार रहा होगा। खुदाई में प्राप्त बहुसंख्यक नारी मूर्तियों से ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका परिवार मातृसत्तात्मक था। मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त अवशेषों से वहाँ के समाज में व्याप्त विभिन्न वर्गों के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है। इन्हें चार वर्गों में बाँटा जा सकता है - विद्वान वर्ग, योद्धा, व्यापारी, तथा शिल्पकार और श्रमिक। समाज में सम्भवतः पुरोहितों का सम्मानित स्थान था। विभिन्न स्थलों की खुदाई से प्राप्त तलवार, पहरेदार के अस्त्र, प्राचीर से योद्धा वर्ग के अस्तित्व का, शिल्प-वस्तुएँ, पत्थर काटने वाले औजार आदि से व्यापारी वर्ग तथा श्रमिक बस्ति से श्रमिकों के अस्तित्व का समाज में प्रमाण मिलता है।

सैंधव लोग शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे। गेहूँ, जौ, चावल, तिल, दाल आदि उनके प्रमुख खाद्यान्न थे। शाक-सब्जी, दूध तथा विभिन्न प्रकार के फल जैसे तरबूज, खरबूज, नारियल, निंबू, अनार आदि शाकाहारी भोजन में प्रमुख थे। भेड़, बकरी, सुअर, मुर्गी, बतख, घड़ियाल, आदि के मांस तथा मछलियाँ खाई जाती थी। उनके वस्त्र सूती तथा ऊनी दोनों प्रकार के होते थे। स्त्रियाँ जूड़ा बाँधती थी तथा पुरुष लम्बे-लम्बे बाल तथा दाढ़ी-मूँछ रखते थे। विविध प्रकार के आभूषण जैसे - कण्ठहार, कर्णफूल, हँसुली, भुजबंद, कड़ा, अँगूठी, करधनी आदि पहने जाते थे। हड़प्पा से सोने का बना कंगन तथा चान्हुदड़ो से लिपिस्टिक के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जिनसे हड़प्पा निवासियों के शृंगार प्रिय होने का प्रमाण मिलता है।

सैंधव निवासी आमोद-प्रमोद के प्रिय थे। पासा इस युग का प्रमुख खेल था। हड़प्पा से मिट्टी, पत्थर, तथा काँचली मिट्टी के बने सात पासे मिलते हैं। मोहनजोदड़ो से भी मिट्टी के बने पासे मिलते हैं। लोथल से शतरंज खेलने के बोर्ड के दो नमूने मिलते हैं। इनमें से एक मिट्टी तथा दूसरा ईंट का बना है। विभिन्न स्थलों से पत्थर, सीप, आदि की गोलियाँ भी मिलती हैं। नृत्य भी मनोरंजन का प्रिय साधन रहा होगा। मछली फंसाने के कई कांटे मिलते हैं। एक मुद्रा पर तीर से हिरन को मारते हुए दिखाया गया है। इससे स्पष्ट है कि लोग शिकार में भी रुचि रखते थे। माप-तौल में घनाकार बाँटों का प्रयोग मिलता है। उत्खनन में बहुसंख्यक अस्त्र-शस्त्र, औजारों तथा हथियारों के नमूने मिलते हैं। यथा-तीर-धनुष

परशु, भाला, कटार, गदा, तलवार, बरछा, कुल्हाड़ी, बधुली, आरा आदि।

आर्थिक जीवन — सैंधव निवासियों के जीवन का मुख्य उद्यम कृषिकर्म था। यहाँ के प्रमुख खाद्यान्न गेहूँ तथा जौ थे लोथल से धान तथा रंगपुर से बाजरा की खेती के प्रमाण मिलते हैं। हड़प्पा में मटर तथा तिल की खेती होती थी। सूती वस्त्रों के अवशेषों से पता चलता है कि यहाँ के निवासी कपास उगाते थे सर्वप्रथम यहाँ के निवासियों ने ही कपास की खेती प्रारम्भ किया था। सिंचाई के लिये नदी से पर्याप्त जल प्राप्त होता था मिट्टी नरम होने के कारण काष्ठ तथा पाषाण उपकरणों की सहायता से खेती होती थी। कालिबंगा से जुते हुए खेत का साक्ष्य प्राप्त हुआ है। जिससे पता चलता है कि खेती हल-बैल आधारित थी। हल के निर्माण में लकड़ी का प्रयोग होता था। सिंचाई के लिये बाँध तथा नहरें भी बनाई गई थी। सैन्धव नगरों की समृद्धि को देखते हुए यह निष्कर्ष निकालना स्वाभाविक है कि वहाँ के किसान अपनी आवश्यकता से अधिक अनाज उत्पन्न करते थे विभिन्न नगरों में अनाज रखने के लिये अन्नागार बने होते थे इनमें संभवतः जनता से कर के रूप में वसूल किया गया अनाज रखा जाता था।

कृषि के साथ-साथ पशुपालन का भी विकास हुआ था। उनके पालतू पशुओं में बैल, गाय, भैंस, कुत्ते, सुअर, भेड़, बकरी, हिरन, खरगोश आदि थे पक्षियों में मुर्गा, बत्तख, तोता, हंस आदि पाले जाते थे कुछ पशुओं की धार्मिक मान्यता थी तथा कुछ को मांस के लिये पाला गया था यह निश्चित नहीं है कि अश्व से उनका परिचय था या नहीं। लोथल तथा रंगपुर से अश्व की मिट्टी की मूर्तियाँ मिली हैं सुरकोटदा से पालतू घोड़े की अस्थियाँ मिली हैं

कृषि तथा पशुपालन के अतिरिक्त सैंधव निवासी उद्योग एवं व्यापार में भी रुचि लेते थे खुदाई में प्राप्त कताई-बुनाई के उपकरणों से पता चलता है कि कपड़ा बनाना एक प्रमुख उद्योग था। सिन्ध प्रदेश में पटुए का अवशेष मिलते हैं शाल तथा धोती यहां के निवासियों के प्रमुख वस्त्र थे जिनका निर्माण यहां के कारीगरों द्वारा किया जाता था। बुनकर वस्त्रों पर कढ़ाई करना भी जानते थे। सैंधव लोग रंगाई के काम से परिचित थे अनेक रंगे हुए बर्तनों के साक्ष्य प्राप्त होते हैं चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाना, खिलौने बनाना, मुद्राओं का निर्माण करना, आभूषण तथा गुड़ियों का निर्माण करना आदि कुछ अन्य प्रमुख उद्योग-धन्धे थे स्वर्णकार सोना, चाँदी, तांबा

कांसा, पीतल आदि धातुओं से आभूषण तथा उपकरण बनाते थे। शंख, सीप, घोंघा, हाथी दाँत से भी वे उपकरण का निर्माण करना जानते थे। लकड़ी की वस्तुओं से पता चलता है कि बढ़ईगिरी का व्यवसाय भी होता था। इस प्रकार हम देखते हैं कि सैंधव निवासियों ने विभिन्न उद्योग-धन्धों में निपुणता प्राप्त कर ली थी।

सैंधव निवासियों ने व्यापार में भी रुचि ली थी। उनका आन्तरिक तथा बाह्य दोनों ही व्यापार समुन्नत था। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो व्यापार के भी केन्द्र थे। मध्य एशिया, उत्तर-पूर्वी अफगानिस्तान, ईरान, बहरीन, मेसोपोटामिया, मिस्र क्रीट आदि देशों के साथ सैंधव निवासियों का घनिष्ठ व्यापारिक सम्पर्क था। यह व्यापार स्थल तथा जल दोनों मार्गों से होता था। लोथल से गोदीबाड़ा का साक्ष्य प्राप्त हुआ है। सुमेरियन लेखों में व्यापार के सम्बन्ध में दिल्मुन, मगन, मेलुहा का उल्लेख मिलता है। यहाँ दिल्मुन, मगन तथा मेलुहा की पहचान क्रमशः बहरीन, मकरान तट तथा सिन्ध प्रदेश से की गई है। थे सभी स्थान सिन्धु तथा मेसोपोटामिया के बीच स्थित थे तथा दोनों देशों के बीच व्यापार में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती थी।

सैंधव काल में सिक्कों का प्रचलन नहीं था। क्रय-विक्रय का मूल्य साधन वस्तु-विनिमय था। मोहनजोदड़ो तथा लोथल से हाथी दांत के बने हुए तराजू के पलड़े मिलते हैं। उनके बाट मुख्यतः घनाकार होते थे। सैन्धव व्यापारी अपनी मुहर रखते थे जिन्हें वे व्यापारिक वस्तुओं के ऊपर लगा देते थे। माल ढोने के लिये बैलगाड़ियों, घोड़ियों, खच्चरों तथा बकरों को काम में लाया जाता था।

धार्मिक जीवन — सैंधव नगरों की खुदाई में किसी भी मन्दिर, समाधि, आदि के अवशेष नहीं मिलते। सैंधव निवासियों के धर्म संबंधी ज्ञान के लिये हमें मुख्य रूप से मुद्राओं, छोटी-छोटी मूर्तियों तथा पाषाण-प्रतिमाओं के आदि प्रमाण पर ही निर्भर रहना पड़ता है। सर जॉन मार्शल के अनुसार मातृदेवी का सैंधव संस्कृति में प्रमुख स्थान था। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चान्हूदड़ो, आदि स्थलों से मिट्टी की बहुसंख्यक नारी मूर्तियां मिलती हैं। मुहरों के ऊपर भी नारी आकृतियों का अंकन विविध रूपों में प्राप्त होता है। इससे स्पष्ट है कि मातृदेवी या नारी देवी की उपासना हड़प्पा काल में काफी प्रचलित थी।

मातृदेवी की उपासना के साथ-साथ हमें एक पुरुष देवता

की उपासना का भी प्रमाण मिलता है मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा के ऊपर पद्मासन मुद्रा में बैठे हुए एक योगी का चित्र प्राप्त होता है पुरुष के दायीं ओर चीता और हाथी तथा बाईं ओर गैंडा, भैंसा चित्रित किये गये है सिर पर एक त्रिशूल जैसा आभूषण है इसके तीन मुख है। मार्शल ने इस देवता को 'रूद्र शिव' से संबंधित किया है

मातृदेवी तथा शिव की पूजा के अतिरिक्त सैंधव निवासी विविध प्रकार के पशुओं, पक्षियों, वृक्षों आदि की उपासना करते थे पशुओं में गैंडा, बैल, चीता, हाथी, भैंसा, कुबड़दार बैल आदि प्रमुख थे फाख्ता एक पवित्र पक्षी माना जाता था। वृक्षों में पीपल वृक्ष को पवित्र माना जाता था अन्य वृक्षों में नीम, खजूर, बबूल आदि का भी अंकन प्राप्त प्राप्त होता है इसके अतिरिक्त वे जल, स्वास्तिक, चक्र को भी पवित्र मानते थे मिट्टी के बर्तनों पर सर्प के कुछ चित्रण मिलते हैं। लोथल से मिले बर्तनों पर सर्प की आकृतियाँ बनी हुई है, इससे नाग पूजा के संकेत प्राप्त होते है संभवतः अनेक सैंधववासी मुद्रा को ताबीज के रूप में में इस्तेमाल करते थे। ताबीजों पर तरह-तरह के चित्र खुदे हुए हैं जिनका अवश्य ही धार्मिक महत्व रहा होगा लोथल तथा कालीबंगा के पुरास्थलों से अग्निकुण्ड अथवा पवित्र वेदियों के साक्ष्य मिलते है

इस प्रकार हम सैन्धव धर्म में मातृदेवी, पुरुषदेवता, की उपासना के साथ-साथ हम अनेक पशु-पक्षियों, वृक्षों, वनस्पतियों, मांगलिक प्रतीकों आदि की पूजा का विधान पाते हैं

कला एवं स्थापत्य — इस सभ्यता मे हमें वास्तुकला, मूर्तिकला, उत्कीर्ण कला, चित्रकला, मृदभाण्ड कला, आदि कलाओं के उन्नत रूप के दर्शन होते हैं यहाँ के नगरों की खुदाई से प्रस्तर, धातु तथा मिट्टी की मूर्तियों की प्राप्ति होती है प्रस्तर मूर्तियों में सर्वप्रथम मोहनजोदड़ो से प्राप्त योगी तथा पुरोहित की मूर्ति का उल्लेख किया जा सकता है सैन्धव मूर्ति कला के अन्तर्गत लाल-रंग को पकाई हुई मिट्टी की मूर्ति का भी उल्लेख किया जा सकता है केवल कुछ को छोड़कर शेष सभी हस्त निर्मित है ये मनुष्यों तथा पशुओं दोनों की है मानव मूर्तियों से कहीं अधिक संख्या में पशुओं की मृण्मूर्तियाँ सैन्धव स्थलों से प्राप्त की गई है सैन्धव कला के अन्तर्गत मुहरों का विशिष्ट स्थान है विभिन्न पुरास्थलों से हमें हजारों की संख्या में मुहरों की प्राप्ति हुई है ये मुहरें आकार में चौकोर, या वर्गाकार होती थी तथा कांचली मिट्टी, चर्ट, गोमेद, मिट्टी की बनी होती थी सैन्धव सभ्यता के विभिन्न स्थलों से हमें मृदभाण्ड के बहुसंख्यक टुकड़े प्राप्त हुए हैं। ये मृदभाण्ड लाल या गुलाबी रंग के होते थे कुछ मृदभाण्ड को लाल रंग से पोत करके उस पर काली रेखाओं से चित्र बनाये गये है